A·P·S·M·College, Barauni (Begusarai) (1)
Deptt. of Economics, Date-15.07.20
Teacher's Name - Dr. Sunil Kr. Sah
Class- B.A-II(H), 4th Paper (International Economics)

INTERNATIONAL ECONOMICS, (UNIT-A)

अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र की आधारभूत अवधारणाएँ और विश्लेषणात्मक उपकरण भी ठीक वही है, जिनका अध्ययन अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों के अन्तर्गत किया जाता है। अर्थशास्त्र के सामान्य सिद्धान्तों की सहायता से हम मानव जाति की आर्थिक क्रियाओं का विश्लेषण करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र में भी जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है, विभिन्न राष्ट्रों के बीच पाये जाने वाले आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्ध भी मनुष्य की अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के प्रयत्नों का एक अंश है। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र में आर्थिक क्रियाओं के अन्तर्राष्ट्रीय पहलुओं पर प्रकाश डाला जाता है। जिन कारणों और परिस्थितियों ने राज्य के अन्तर्गत व्यापार को प्रोत्साहित किया जाता है वे ही कारण अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के आधार भी बने है।

अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र वह विज्ञान व कला है, जिसमें राष्ट्रों के मध्य आर्थिक सम्बन्धों एवं उनसे उत्पन्न होनेवाली आर्थिक समस्याओं का अध्ययन किया जाता है और समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया जाता है।

Prof. Harrod ने अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र को इस प्रकार परिभाषित किया है- " अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र का सम्बन्ध उन सभी आर्थिक लेन-देनों से है, जो देश की सीमा से बाहर किये जाते हैं। उनमें उत्प्रवासन एक राष्ट्र के नागरिकों द्वारा दूसरे राष्ट्र के नागरिकों के ऋण का आदान-प्रदान और माल का क्रय-विक्रय शामिल है।"

Prof. Ellsworth ने अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र की परिभाषा इस प्रकार दी है- जिस प्रकार अर्थशास्त्र की परिभाषा यह कहकर की जाती है कि अर्थशास्त्र वह है, जो अर्थशास्त्री करते हैं, उसी प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र का सम्बन्ध भी विभिन्न राष्ट्रों के बीच ~~सम्बन्ध~~ आर्थिक सम्बन्धों से है।"

इस प्रकार, उपरोक्त विवेचन के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र की एक सरल परिभाषा इस प्रकार दे सकते हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र सामान्य अर्थशास्त्र की वह शाखा है, जिसमें विभिन्न राष्ट्रों के बीच व्यापार से उत्पन्न होने वाले आर्थिक सम्बन्धों एवं उससे सम्बन्धित आर्थिक समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।"

अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र का क्षेत्र और विषय-सामग्री :-
(Scope and Subject-Matter of International Economics)

अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र के क्षेत्र से तात्पर्य उस सम्पूर्ण ज्ञान से है, जिसका अध्ययन इसके अन्तर्गत किया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र का क्षेत्र विस्तृत हो गया है। इसके अध्ययन की विषय-सामग्री में निम्नलिखित विषयों को शामिल किया जाता है :-

(1) अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र की आवश्यकता और सिद्धान्त :- इसके अन्तर्गत हम अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का अर्थ, महत्व एवं लाभ का अध्ययन करते हैं तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के विभिन्न सिद्धान्तों का मूल्यांकन करते हैं।

(2) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक नीति :- किसी देश की अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक क्रियाओं से सम्बन्धित नीति को व्यापारिक नीति कहा जाता है। इसमें आयात-निर्यात, कोटा, घरेलू उद्योगों को संरक्षण एवं उनका स्वभाव, विदेशी मुद्रा व सहायता, व्यापारिक समझौते व भुगतान आदि से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

(3) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के मौद्रिक पहलू :- इसके अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय भुगतान की आवश्यकता का अध्ययन किया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय वित्त में विनिमय दरों का बहुत महत्व होता है, क्योंकि भुगतान राशि उसी विनिमय दर के आधार पर निश्चित की जाती है।

(4) अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक एवं मौद्रिक सहयोग :- अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से सम्बन्ध सिद्धान्तों एवं प्रवृत्तियों के साथ-साथ, अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग की भी विस्तृत विवेचना की जाती है। आज अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं जैसे- विश्व बैंक, IMF, अन्तर्राष्ट्रीय वित्त निगम, अन्तर्राष्ट्रीय विकास परिषद् आदि इस सहयोग के प्रतीक के रूप में विद्यमान हैं और इसमें सतत् वृद्धि हेतु प्रयत्नशील हैं।

(5) विदेशी व्यापार की संरचना :- इसके अन्तर्गत हम देश विशेष के विदेशी व्यापार के आकार, संरचना, दिशा व व्यापार तथा भुगतान संतुलन की स्थिति का अध्ययन करते हैं। साथ ही, देश-विशेष की विदेशी-व्यापार नीति का अध्ययन किया जाता है, ताकि देश-विशेष के विदेशी व्यापार सम्बन्धी आधुनिक प्रवृत्तियों और भुगतान संतुलन की वास्तविक स्थिति से अवगत हुआ जा सके।